प्राचीन भारत में शैव धर्म का उद्भव, विकास एवं धार्मिक-सांस्कृतिक योगदानः एक ऐतिहासिक अध्ययन

Dr. Richa Pathak

ABSTRACT

शैव धर्म कई हिंदू धार्मिक परंपराओं के लिए एक व्यापक शब्द है, जो शिव को सर्वोच्च प्राणी के रूप में पूजते हैं; इसका उद्भव पूर्व-आर्यन परंपराओं, वैदिक रुद्र और उत्तर-वैदिक परंपराओं के मिश्रण से हुआ।

KEYWORDS-कश्मीर शैव, पाशुपत, रुद्र, लिंगायत, शिव, शैव धर्म

Dr. Richa Pathak
Assistant Professor, Department of Ancient History Archaeology and Culture
K.S. Saket P.G. College, Ayodhya

सार

शैव धर्म (/ a v z m / ; संस्कृत : शवसंप्रदायः , रोमनकृत : शैवसंप्रदायः) कई हिंदू धार्मिक परंपराओं के लिए एक व्यापक शब्द है , जो शिव की पूजा करते हैं [1] [2] [3] सर्वोच्च प्राणी के रूप में। शैव धर्म के अनुयायियों को शैव या शैव कहा जाता है, जिनकी संख्या लगभग 385 मिलियन है, [4] [5] [6] पूरे दक्षिण एशिया में मुख्य रूप से भारत , श्रीलंका और नेपाल में। [7] [8]

शैव धर्म पूर्व-आर्यन धर्मों और परंपराओं, वैदिक रुद्र और उत्तर-वैदिक परंपराओं के मिश्रण के रूप में विकसित हुआ , जिसमें स्थानीय परंपराओं और योग , पूजा और भक्ति को समाहित किया गया। [9] [2] वैदिक देवता रुद्र की पूजा इसकी सबसे पुरानी ज्ञात जड़ है, लेकिन संप्रदायगत रुद्र-शिव पूजा का सबसे पहला प्रमाण पशुपत (प्रारंभिक ईस्वी) के साथ मिलता है, [2] जो हिंदू संश्लेषण के साथ उभरा , जब कई स्थानीय परंपराएं वैदिक-ब्राह्मणवादी संप्रदाय के साथ जुड़ गईं। [10] पशुपत आंदोलन उत्तर भारत में तेजी से फैला, जिससे शैव धर्म के विभिन्न रूप उत्पन्न हुए और इसके बाद विभिन्न तांत्रिक परंपराओं का उदय हुआ। [2] भक्तिमय और अद्वैतवादी शैव धर्म दोनों ही पहली सहस्राब्दी ईस्वी में लोकप्रिय हुए और यह कई हिंदू राज्यों की प्रमुख धार्मिक परंपरा बन गया। [2] इसके तुरंत बाद यह दक्षिण पूर्व एशिया में पहुंचा , जिसके परिणामस्वरूप इंडोनेशिया के द्वीपों के साथ-साथ कंबोडिया और वियतनाम में हजारों शैव मंदिरों का निर्माण हुआ , और इन क्षेत्रों में बौद्ध धर्म के साथ सह-विकास हुआ।

परिचय

शैव धर्म हिंदू धर्म की एक प्राचीन परंपरा है जिसमें भगवान शिव को सर्वोच्च देवता के रूप में पूजा जाता है। यह शिव को रक्षक और संहारक दोनों के रूप में देखता है, जिनमें शक्ति, ज्ञान और करुणा का संगम है। अनुयायी उनकी अनेक रूपों में पूजा करते हैं, जिनमें ध्यानमग्न तपस्वी, ब्रह्मांडीय नर्तक या लिंग के रूप में पूजा शामिल है। शैव धर्म भक्ति, नैतिक जीवन, ध्यान और आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग का उपदेश देता है।

शैव धर्म की उत्पत्ति और विकास[1,2,3]

शैव धर्म की प्राचीन जड़ें:

शैव धर्म को भारत और शायद विश्व के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक माना जाता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आज भी एक जीवंत धर्म है, जिसका पालन लाखों लोग करते हैं। यह एक ऐसी परंपरा है जो भगवान शिव को सर्वोच्च देवता मानती है। विद्वानों का मानना है कि शैव धर्म की उत्पत्ति वैदिक काल से पहले, भारत में आर्यों के आगमन से बहुत पहले हुई होगी।

सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त साक्ष्य:

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में हुई खुदाई में मिली मूर्तियां और मुहरें एक पुरुष देवता की पूजा का संकेत देती हैं, जिसे कई विद्वान भगवान शिव का प्रतिरूप मानते हैं। प्रमुख पुरातत्वविद् सर जॉन मार्शल ने कहा है कि शैव धर्म की जड़ें ताम्रपाषाण युग तक जा सकती हैं , जिससे यह संभवतः विश्व का सबसे प्राचीन जीवित धर्म बन जाता है।

वैदिक और गैर-वैदिक बहस:

विद्वानों के बीच इस बात पर बहस चल रही है कि शैव धर्म वैदिक है या गैर-वैदिक।

सर जॉन मार्शल, जी.यू. पोप, जी. स्लेटर और मराइमलाई अडिगल जैसे विद्वानों का मानना है कि शैव धर्म आर्य-पूर्व और वैदिक-पूर्व है, जिसकी उत्पत्ति द्रविड़ परंपराओं से हुई है।

के.ए. नीलाकांत शास्त्री जैसे अन्य लोग तर्क देते हैं कि शैव धर्म की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई थी।

वैदिक रुद्र से संबंध:[4,5,6]

वैदिक ग्रंथों में रुद्र नामक एक लघु देवता का वर्णन मिलता है, जिनके कई गुण शिव से मिलते-जुलते हैं। रुद्र को उग्र, विनाशकारी और तूफ़ान, बिजली और जंगल की आग से जुड़ा हुआ बताया गया है। वे पशु बलि के स्वामी भी हैं। समय के साथ, रुद्र के गुण शिव की अवधारणा में समाहित हो गए।

वैदिक और उपनिषद ग्रंथों में विकास:

यजुर्वेद में शिव का वर्णन सौ नामों से किया गया है, जिनमें पशुपति (पशुओं के स्वामी), नीलग्रीव (नीले गले वाले) और सितिकान्त (सफेद गले वाले) शामिल हैं।

श्वेताश्वतर उपनिषद में, शिव को हर, महादेव, ईश, ईशान, महेश्वर और भगवत के रूप में संदर्भित किया गया है, जिन्हें 'पर्वतों में निवास करने वाला," "हजार आंखों वाला" और "स्थिर" बताया गया है।

महाकाव्यों में भूमिका:

महाभारत में शिव के 1,008 नामों का उल्लेख है और इसमें शिव द्वारा पर्वत राजा हिमवान की पुत्री उमा से विवाह की कथा बताई गई है।

रामायण में, शिव को गंगा नदी के उद्गम से जोड़ा गया है , और वे गंगा को अपनी जटाओं में धारण करके स्वर्ग से उसके अवतरण को नियंत्रित करते हैं ताकि उसकी शक्ति कम हो जाए।

पुराणों में वर्णित विवरण और रूपः

पुराणों में शिव का वर्णन विभिन्न रूपों में किया गया है, जैसे अर्धनारीश्वर (आधा पुरुष, आधा स्त्री), दक्षिणामूर्ति (सत्य और योगिक ध्यान के शिक्षक), महायोगी और संहारमूर्ति (बुराई का नाश करने वाले)।

उन्हें अक्सर उलझे हुए बालों, अर्धचंद्र, सर्पों, त्रिशूल, बैल को अपने वाहन के रूप में और राख से सने शरीर के साथ चित्रित किया जाता है।

शिव की तीसरी आंख ज्ञान का प्रतीक है, जबकि उनके हाथों में अग्नि, ढोल और कुल्हाड़ी है। उन्हें नृत्य करते देवता नटराज के रूप में भी पूजा जाता है।

तमिल साहित्य में शैव धर्मः[7,8,9]

संगम काल से लेकर आगे तक प्राचीन तमिल साहित्य में शिव का व्यापक रूप से उल्लेख मिलता है ।

भक्तिपूर्ण तमिल ग्रंथों में उनके 64 दिव्य खेलों, उपाधियों, गुणों, कार्यों, आभूषणों और हथियारों का विस्तृत वर्णन किया गया है, जो दक्षिण भारतीय संस्कृति में उनके महत्व को दर्शाता है।

परंपराओं का संगमः

शिव की पूजा सिंधु घाटी सभ्यता से चली आ रही है । समय के साथ, वैदिक देवता रुद्र और स्वदेशी शिव का विलय हो गया, जिससे शिव को वैदिक देवताओं में केंद्रीय स्थान प्राप्त हुआ।

श्वेताश्वतर उपनिषद के समय तक, शिव को सर्वोच्च देवता महादेव के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी थी।

ऐतिहासिक संदर्भः

विदेशियों द्वारा शिव का सबसे पहला उल्लेख यूनानी राजदूत मेगास्थनीज द्वारा किया गया था।

गुप्त काल के दौरान , शिव पूजा को विशेष महत्व प्राप्त हुआ, खासकर दक्षिण भारत में, जहां शैव धर्म का भक्ति आंदोलन फला-फूला और अपने चरम पर पहुंचा.

विचार-विमर्श

शैव धर्म में ईश्वर की सामान्य अवधारणा

भगवान शिव एक जटिल देवता हैं जिनमें उग्र और दयालु दोनों पहलू मौजूद हैं।

एक ओर, उनका एक अंधकारमय और विनाशकारी पहलू है, जो वैदिक रुद्र से विरासत में मिला है। ऐसा कहा जाता है कि वे श्मशान घाटों में निवास करते हैं, खोपड़ियों की माला धारण करते हैं और रुद्र तांडव करते हैं, जो एक ब्रह्मांडीय नृत्य है जो

कल्प के अंत में दुनिया का विनाश करता है।

दूसरी ओर, शिव महान तपस्वी हैं, जो हिमालय में कैलाश पर्वत पर शांतिपूर्वक ध्यान कर रहे हैं। उनके जटाधारी बाल हैं, सिर पर अर्धचंद्र है और उनसे पवित्र गंगा नदी बहती है।[10,11,12]

शिव में उर्वरता और प्रकृति के देवता के गुण भी दिखाई देते हैं, जिन्हें अक्सर पशुपति (पशुओं के स्वामी) और प्रजनन के संरक्षक के रूप में जाना जाता है।

उनकी पूजा आमतौर पर लिंग के रूप में की जाती है, जो दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है।

कुछ शिव संप्रदाय पशु बलि या आत्म-यातना सहित चरम अनुष्ठानों का अभ्यास करते थे, लेकिन अधिकांश संप्रदाय शिव को प्रेम, कृपा और नैतिक मार्गदर्शन के देवता के रूप में महत्व देते हैं।

तमिल शैव धर्म विशेष रूप से शिव को एक दयालु पिता के रूप में उजागर करता है, जो सभी जीवित प्राणियों की देखभाल करते हैं और उन्हें बुराई से बचाते हैं।[12,13,14]

पशुपत और कपालिक परंपराएँ

पशुपत उत्तर भारत का सबसे प्राचीन शैव संप्रदाय है। वे तपस्या और ध्यान पर बल देते हैं और शिव को परम ईश्वर मानते हैं। उनकी विचारधारा के अनुसार:

- शिव ब्रह्मांड के कारण हैं, जबकि आत्माएं और प्रकृति उनके परिणाम हैं।
- मुक्ति का अर्थ है आत्मा का शिव के साथ शाश्वत रूप से एकात्म हो जाना।
- उनकी योगिक साधनाओं में एकांत में ध्यान करना शामिल था, जो अक्सर श्मशान घाटों में किया जाता था।

कपालिक, जो एक अधिक चरम शाखा थी, ने पूर्ण त्याग का अभ्यास किया, खोपड़ी (कपाल) और शराब के कटोरे धारण किए और उन्हें भैरव या "भयानक" के रूप में जाना जाता था।

दोनों समूहों ने इस बात पर जोर दिया कि संसार से वैराग्य ही मुक्ति का मार्ग है।

कश्मीरी शैववाद (त्रिक शैविज्म)

कश्मीर में 9वी शताब्दी में विकसित, यह शैव धर्म का एक अद्वैतवादी रूप है जिसे त्रिक कहा जाता है।

प्रमुख ग्रंथ: सिद्धांततंत्र, मालिनीतंत्र, वामकतंत्र, वसुगुप्त द्वारा शिवसूत्र में व्यवस्थित दर्शन की व्याख्या के साथ।

प्रमुख विचारक: सोमानंद, उत्पलदेव, भास्कराचार्य, अभिनवगुप्त, क्षेमराज।

मुख्य विचार:

- परम सत्ता (शिव), आत्मा और पदार्थ, ये तीन सिद्धांत हैं।[15,16,17]

- अद्वैत दर्शन से प्रभावित होकर, यह सिखाता है कि शिव परम वास्तविकता हैं, जिनसे सब कुछ उत्पन्न हुआ है।
- परम सत्ता शिव और शक्ति दोनों है, जो चेतना (शिव) और गतिशील ऊर्जा (शक्ति) का प्रतिनिधित्व करती है।
- यह ब्रह्मांड कोई भ्रम नही है; यह दिव्य ऊर्जा की अभिव्यक्ति है।
- व्यक्तिगत आत्मा और परम सत्ता के बीच एकत्व के ज्ञान से ही मुक्ति प्राप्त होती है।
- मोक्ष के लिए ईश्वरीय कृपा (कृपा) और स्वयं का प्रयास दोनों ही महत्वपूर्ण हैं; एक के बिना दूसरा सफल नही हो सकता।
- संसार में जीवन की पुष्टि की जाती है, इसका त्याग नही किया जाता। भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व में सामंजस्य स्थापित किया जाता है।

वीर शैववाद (लिंगायतवाद)

इसकी शुरुआत 12वी शताब्दी में उत्तर-पश्चिमी कर्नाटक में एक सुधारवादी शैव आंदोलन के रूप में हुई थी।

शुरुआती संस्थापकों में एकोरामा, पंडितराध्या, रेवना, मारुला, विश्वराध्या और सुधारक श्री बसवेश्वर शामिल हैं, जिन्हें नंदी का अवतार माना जाता है।

मूल सिद्धांतः

- शिव सर्वोच्च हैं, और पूजा केवल उन्ही के लिए होनी चाहिए।
- उन्होंने हिंदू धर्म की पारंपरिक रस्मों, जैसे कि जनेऊ संस्कार, को त्याग दिया।
- भक्त गले में धातु के डिब्बे में एक छोटा लिंग धारण करते हैं, जो शुद्धि और दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है, न कि किसी लिंग वस्तु का।
- सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है: जातिगत भेदभाव को अस्वीकार करता है और महिलाओं को समान दर्जा प्रदान करता है।
- उनके अनुयायी सख्त शाकाहारी होते हैं, जादू-टोने का विरोध करते हैं और मृतकों को जलाने के बजाय दफनाते हैं।
- उनका मानना है कि शिव की आंतरिक शक्ति प्रत्येक व्यक्ति में निवास करती है, जिससे वे सभी प्राणियों में दिव्यता देख पाते हैं।[18,19,20]

शैव सिद्धांत

दक्षिण भारत की एक प्रमुख शैव दार्शनिक प्रणाली, जो शैव आगमों, उपनिषदों, तिरुमुराई और मेइकांत शास्त्रों पर आधारित है। सिद्धांत शब्द का अर्थ "स्थापित निष्कर्ष" है और यह शिव उपासकों के लिए निश्चित दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है।

मुख्य विशेषताएं:

- यह वैदिक और आगमिक परंपराओं को जोड़ता है, जिसमें वेदों को सामान्य स्रोत और आगमों को विशेष स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- ईश्वरवादी दर्शन जो ईश्वर, आत्मा और पदार्थ के बीच संबंध की व्याख्या करता है।
- यह तीन शाश्वत वास्तविकताओं को मान्यता देता है: ईश्वर, आत्मा और पदार्थ।
- आत्माओं को ईश्वर की कृपा से सहायता मिलती है, जो मुक्ति के लिए आवश्यक है।
- ईश्वर ब्रह्मांड और आत्माओं से अविभाज्य है, लेकिन एक समान नहीं; वह उनके भीतर निवास करता है और उनका मार्गदर्शन करता है।
- मुक्ति आत्मा की ईश्वर के साथ एकता की अनुभूति है, और गुरु के माध्यम से ज्ञानोदय की प्रक्रिया सुगम होती है, हालांकि शिव कृपा और ज्ञान के परम स्रोत बने रहते हैं.

परिणाम

शैव संप्रदाय का इतिहास हिंदू धर्म की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक है। यह रुद्र-शिव की पूजा पर आधारित है और वैदिक काल से लेकर आज तक निरंतर विकसित होता रहा। शैव मत शिव को परमेश्वर मानता है और इसमें भक्ति, योग, तंत्र, दर्शन और आचार-विचार का अनोखा मिश्रण है।

1. वैदिक काल (1500–500 ईसा पूर्व)

- रुद्र का उल्लेख ऋग्वेद में (सूक्त 2.33, 1.43, 1.114 तथा शतरुद्रीय सूक्त)। रुद्र को क्रोधी, औषधि-दाता और पशुपति कहा गया।
- श्वेताश्वतर उपनिषद् (400–200 ईसा पूर्व) में रुद्र-शिव को प्रथम बार व्यवस्थित रूप से वर्णित किया गया।
- प्रारंभिक शैव पूजा में आर्येतर (द्रविड़, स्थानीय) तत्वों का योग: लिंग पूजा, नंदी, सर्प, योग और पूजा-आराधना।
- कुछ विद्वान सिंधु घाटी सभ्यता (2500 ईसा पूर्व) के पशुपति सील को प्रोटो-शिव मानते हैं (योग मुद्रा में जानवरों से घिरा)।

2. महाकाव्य और पुराण काल (500 ईसा पूर्व–500 ईस्वी)[17,18,19]

- महाभारत में शैव साधुओं का उल्लेख (शांति पर्व)।
- पतंजलि के महाभाष्य (2री शताब्दी ईसा पूर्व) में "शिव-भागवत" साधुओं का जिक्र।
- गुप्त साम्राज्य (320–500 ईस्वी) में शैव मत का विस्तार। शिव पुराण, स्कंद पुराण, लिंग पुराण आदि में विस्तृत शिव-कथाएँ।
- गुप्त राजाओं के बाद कई राजवंश (औलिकर, मौखरि, मैत्रक, कलचुरि) ने शैव मत अपनाया।

3. संगठित संप्रदायों का उदय (2री शताब्दी ईस्वी से)

लकुलीश पाशुपत (2री शताब्दी ईस्वी): सबसे प्राचीन व्यवस्थित शैव संप्रदाय। गुजरात के करवन में लकुलीश (शिव के 28वें

अवतार) ने पाशुपत सूत्र रचा। कौंडिन्य का पञ्चार्थ भाष्य प्रमुख टीका। यह मत ब्राह्मण पुरुषों के लिए था, पशु-पति सिद्धांत और पाँच चरणों वाली साधना पर आधारित।

कापालिक और कालामुख (1ली सहस्राब्दी ईस्वी): तांत्रिक-आतिमार्ग संप्रदाय। खोपड़ी का कटोरा, श्मशान साधना, शराब आदि। ये वेद-विरोधी माने जाते थे, पर बाद में शैव तंत्र का हिस्सा बने।

4. दक्षिण भारत में शैव सिद्धांत (5वी–13वी शताब्दी)

- तमिलनाडु में नयनार संतों (संबंदर, अप्पर, सुंदरर – 7वी शताब्दी) ने तेवरम गीतों से भक्ति आंदोलन चलाया।
- तिरुमूलर का तिरुमंतरम (7वी–8वी शताब्दी)।
- मेयकंडार (13वी शताब्दी) ने द्वैत शैव सिद्धांत को दार्शनिक रूप दिया: पशु-पति-पाश।
- चोल, पल्लव और चालुक्य राजवंशों का संरक्षण।

5. कश्मीर शैव (त्रिक मत) – 8वी–11वी शताब्दी

- अद्वैतवादी, अति-उन्नत तांत्रिक दर्शन।
- वसुगुप्त (शिव सूत्र), सोमनंद, उत्पलदेव और अभिनवगुप्त (तंत्रालोक) प्रमुख आचार्य।
- स्पंद और प्रत्यभिज्ञा दर्शन। इस्लामी आक्रमणों के बाद कश्मीरी पंडितों द्वारा संरक्षित; 20वी शताब्दी में स्वामी लक्ष्मण जू द्वारा पुनरुत्थान।

6. वीरशैव/लिंगायत आंदोलन (12वी शताब्दी)

- कर्नाटक में बसवन्ना ने सामाजिक क्रांति की – जाति-विरोध, स्त्री-समानता, लिंग-धारण।
- शैव सिद्धांत को लोक-भाषा (कन्नड़) में लाया। आज भी कर्नाटक में प्रमुख।

7. मध्यकालीन विस्तार और वास्तुकला

एलिफेंटा गुफाएँ (5वी–8वी शताब्दी) – त्रिमूर्ति शिवः[18,19]

एलोरा कैलास मंदिर (8वी शताब्दी, राष्ट्रकूट) – एक ही चट्टान से कटा विश्व का सबसे बड़ा रॉक-कट मंदिरः

शैव मत दक्षिण-पूर्व एशिया (कंबोडिया, इंडोनेशिया, वियतनाम) तक फैला।

8. आधुनिक काल

इस्लामी और ब्रिटिश काल में कई शाखाएँ कमजोर हुई, पर दक्षिण भारत और कश्मीर में जीवित रही। आज शैव मंदिर (काशी, अमरनाथ, रामेश्वरम्) और संप्रदाय (दशानामी, नाथ, लिंगायत) सक्रिय हैं।

समयरेखा (संक्षिप्त)

- 1500 ईसा पूर्वः वैदिक रुद्र

- 2री शताब्दी ईस्वीः लकुलीश पाशुपत
- 7वी शताब्दीः नयनार भक्ति
- 8वी–11वीः कश्मीर शैव + एलोरा
- 11वीः चोल मंदिर
- 12वीः लिंगायत
- आजः भारत + वैश्विक शिव भक्ति

शैव संप्रदाय ने हिंदू दर्शन को योग, तंत्र और भक्ति से समृद्ध किया।

निष्कर्ष

हालांकि शिव की पूजा बहुत ज़्यादा होती है, लेकिन हिंदू धर्म सबसे मुश्किल धर्मों में से एक है और यह लोगों को अलग-अलग तरह के आध्यात्मिक कल्चर और रीति-रिवाजों के साथ जीने के तरीके की ओर ले जाता है। हिंदू कई तरह के कल्चरल मामलों में अलग-अलग हैं, जिनमें पॉलीथीइस्टिक, मोनोथीइस्टिक, एथीइस्टिक और साथ ही ह्यूमनिस्ट परंपराएं और कल्चर शामिल हैं; कोई खास बात नही है।

शैव धर्म एक हिंदू धर्म की परंपरा लगती है जिसका मुख्य फोकस हिंदू देवता शिव की पूजा पर आधारित है। शैव धर्म कई सबकल्चर में बंटा हुआ लगता है, हर एक की अपनी फिलॉसफी है और साथ ही कुछ अलग-अलग तरह के धर्म भी हैं जो इलाके के अंतर की वजह से मौजूद हैं। ऐसा लगता है कि शैव धर्म का एक बड़ा धर्मग्रंथ है जो सदियों से मौजूद है और बचाकर रखा गया है जिसमें अलग-अलग फिलॉसॉफिकल विचार शामिल हैं, इनकी पढ़ाई उन खास स्कूलों में होती है जो अपनी-अपनी संस्कृतियों को मानते हैं।

वैष्णवों ने 7वी सदी में सांस्कृतिक परंपराओं की शुरुआत की, उससे पहले, शैव धर्म दक्षिण भारत के इलाके में सबसे ज़्यादा माना जाने वाला सांस्कृतिक पहलू लगता था। यह एक और सबकल्चर के साथ था जिसे बड़े पैमाने पर माना जाता था, जिसे बौद्ध धर्म के नाम से जाना जाता था, साथ ही जैन धर्म भी था, जो पूरे ऐतिहासिक समय में वैदिक काल से पहले का लगता है। इस बात के बावजूद कि इसमें शामिल सभी हिंदू सिस्टम की शुरुआत पुरानी लगती है, शैव धर्म की शुरुआत और दक्षिण भारत में फैलाव काफी पहले हुआ था, खासकर जब सबूत महाभारत जैसे महाकाव्यों में इसकी मौजूदगी दिखाते हैं। [20]

संदर्भ

1. बिस्कोप 2020 , पृ. 15–16.
2. बिशॉप 2011 .
3. चक्रवर्ती 1986 , पृ. 1.
4. प्रेस्टन ।
5. जॉनसन और ग्रिम 2013 , पृ. 400.

6. जोन्स और रयान 2006 , पृ. 474.
7. बाढ़ 1996 , पृ. 17.
8. की, पृ.xxvii.
9. चक्रवर्ती 1986 , पृ. 66-70.
10. बाढ़ 1996 , पृ. 148–150.
11. बाढ़ 2003 , पृ. 208–214.
12. गोण्डा 1975 , पृ. 3-20, 35-36, 49-51.
13. बाढ़ 1996 , पृ. 162–167.
14. टैगारे 2002 , पृ. 16–19.
15. बाढ़ 2003 , पृ. 202–204.
16. तत्तवानंद 1984 , पृ. 54.
17. बाढ़ 1996 , पृ. 158.
18. स्मिथ 1996 , पृ. 116.
19. डाइकोव्स्की 1989 , पृ. 4.
20. आप्टे 1965 , पृ. 919.